**टोपी**

**प्रश्न1. गवरइया और गवरा के बीच किस बात पर बहस हुई और गवरइया को अपनी इच्छा पूरी करने का अवसर कैसे मिला ?**

उत्तर- गवरइया और गवरा के बीच आदमी द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों पर बहस हुई | गवरइया कपड़ों के पक्ष में थी और गवरा विपक्ष में था | गवरइया आदमियों की तरह टोपी पहनकर सुंदर दिखना चाहती थी | एक दिन दाना चुगते-चुगते गवरइया को जब रुई का फाहा मिल गया, तब उसे अपनी इच्छा पूरी होती हुई दिखाई दी और वह खुशी से झूम उठी |

**प्रश्न2. टोपी बनवाने के लिए गवरइया किस-किस के पास गई ? टोपी बनने तक के एक-एक कार्य को लिखें |**

उत्तर- रुई का फाहा मिलते ही गवरइया उसे लेकर धुनिया के पास गई | धुनिया से रुई धुनवाने के बाद वह कोरी के पास गई | कोरी ने एकदम महीन और लच्छेदार सूत काता | सूत लेकर गवरइया बुनकर के पास गई | बुनकर ने काफ़ी गफ़श और दबीज कपड़ा बुनकर दिया | कपड़ा लेकर गवरइया दर्जी के पास गई | दर्जी ने सबसे निराली पाँच फुँदनेवाली टोपी बनाकर दी| सबने उम्दा काम किया था क्योंकि गवरइया ने उन्हें उचित मेहनताना दिया था |

**प्रश्न3. गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने क्यों जड़ दिए ?**

उत्तर- गवरइया की स्पष्टवादिता और खरे व्यवहार से दर्जी अत्यंत प्रभावित हुआ | जब गवरइया ने दर्जी को एक टोपी खुद रखने का प्रस्ताव दिया तब दर्जी खुशी के मारे फूला न समाया | खुश होकर दर्जी ने अपनी तरफ से टोपी में पाँच फुँदने लगा दिए | किसी ने ठीक ही कहा है कि जब मुँह माँगी मजूरी मिले तो काम करने में एक अलग ही जान आ जाती है और उस काम की सुंदरता भी बढ़ जाती है |

**प्रश्न4. गवरइया के स्वभाव से प्रमाणित होता है कि कार्य के लिए उत्साह आवश्यक है | सफलता के लिए उत्साह की आवश्यकता क्यों पड़ती है ? तर्क सहित उत्तर लिखिए |**

उत्तर – यह सर्वथा सत्य है कि कार्य की सफलता के लिए उत्साह आवश्यक है | उत्साह व्यक्ति को कार्य करने की प्रेरणा देता है | हतोत्साहित व्यक्ति को कार्य में सफलता कभी नहीं मिलती है | गवरइया ने सभी कारीगरों को बतौर अपनी आधी चीज़ें दे डाली | जिससे उनके कार्य करने का उत्साह बढ़ गया | जैसे रुई का अच्छा धुनना, महीन सूत का काता जाना और बढ़िया कपड़े का बुना जाना | सभी ने मिलकर दर्जी का काम आसान बना दिया | अतः उत्साहित होकर दर्जी ने न केवल सुंदर टोपी सिली बल्कि उसमें पाँच फुँदने भी जड़ दिए | अतः कार्य की सफलता के लिए कारीगर में उत्साह का होना आवश्यक है |

**आशय**

1. **“कपड़े पहन-पहनकर जाड़ा–गरमी-बरसात सहने की उनकी सकत भी जाती रही है |..... और इस कपड़े में बड़ा लफड़ा भी है | कपड़ा पहनते ही पहनने वाले की औकात पता चल जाती है .... आदमी-आदमी की हैसियत में भेद पैदा हो जाता है |”**

प्रस्तुत पंक्तियों में गवरा गवरइया को समझाने की कोशिश कर रहा है कि कपड़े पहनने के कई नुकसान भी होते हैं | कपड़ा पहनने से आदमी की सुंदरता छिप जाती है तथा वह बदसूरत लगने लगता है | मनुष्य सदियों से मौसम के अनुसार कपड़ा पहनता आ रहा है | इस कारण से मौसम की मार सहने की उसकी शक्ति दिन–ब-दिन कम होती जा रही है | कपड़े पहनने का एक और नुकसान यह भी है कि इससे इंसान की हैसियत का भी पता चल जाता है | जिससे समाज में भेद - भाव पैदा हो जाता है |

इस प्रकार गवरा गवरइया से कपड़े पहनने से होने वाले अनेक नुकसान के बारे में समझाता है, लेकिन धुन की पक्की गवरइया गवरा के बातों में नहीं आती और टोपी पहनने की ज़िद कर बैठती है |

1. **टोपी तो आदमियों का राजा पहनता है | जानती है, एक टोपी के लिए कितनों का टाट उलट जाता है | ज़रा-सी चूक हुई नहीं कि टोपी उछलते देर नहीं लगती | अपनी टोपी सलामत रहे, इसी फिकर में कितनों को टोपी पहनानी पड़ती है |.....मेरी मान तो तू इस चक्कर में पड़ ही मत |”**

प्रस्तुत पंक्तियों में गवरइया ज़िद कर बैठती है कि उसे टोपी पहननी है तो गवरा उसे बताता है कि टोपी पहनने वालों को अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ता है | एक टोपी के लिए कितने राजा-महाराजा अपने सिंहासन से हाथ धो बैठते हैं | अपनी टोपी बचाने के लिए दूसरों को टोपी पहनानी पड़ती है | अर्थात् दूसरों को मूर्ख बनाना पड़ता है | इसलिए गवरा समझाता है कि वह टोपी के चक्कर में न पड़े |

इस व्यंग्यात्मक कथन के माध्यम से लेखक ने राजनीति के कटु सत्य को अनावृत किया है | उन्होंने स्पष्ट किया है कि अपनी सत्ता और शासन को बचाए रखने के लिए लोग क्या-क्या नहीं करते हैं |